केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
भोपालसंभाग
मैदा मिल के सामने, भोपाल–462 011
दूरभाषकमांक 2550728(D.C.)
2551678 (स.आ.)
2551699 (प्र.अ./ले.प.एवं ले.अ.)
फैक्सः 0755–2553126
ई–मेल:acbhopal@yahoo.com

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
BHOPAL REGION
Opp. Maida Mills,Bhopal-462011
Phone: 2550728 (DC)
2551678 (ACs)
2551699 (AO/FO)
Fax: 0755-2553126
E.Mail:acbhopal@yahoo.com

F.DO/2015-16 / केविसं / क्षे.का.भो /

दिनांक 06.11.2015

प्रिय प्राचार्यगण,

कोई भी व्यक्ति अपने स्वयं के द्वारा किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप तब खुश हो पाता है जब वह सफलता के मंत्र जैसे–एक निश्चित सीमा में साहस, कार्य के प्रति लगन एवं स्नेह और लक्ष्य के स्पष्ट ज्ञान के महत्व को जान लेता है। सफलता कोई अस्तित्व विहीन स्वप्न नहीं है, उसकी निश्चित्ता का मुझे विश्वास है। अपने स्वयं के अनुभव और विचारों के उचित प्रयोग से कोई भी व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है । अपने दृढ़निश्चय और प्रतिबद्धता के माध्यम से अपनी पूर्व की विफलता को भी पुनः सफलता में बदला जा सकता है। अतः जीवन को उसकी सहजता से जिएं, कभी अहसानफरामोश न हों।

हम सब में जो सबसे विचारशील हैं, उनकी अवधारणा सफलता के भाव को उसी तरह अंतरतम से महसूस करने की हो सकती है। सफलता को बाहरी परिदृश्यों से तब निर्मित माना जा सकता है, जब वह परिपक्व दर्शन के अमूर्त मानवीय मूल्यों से मिलती है। आपको मालूम है कि महात्मा गांधी ने जिन बातों से विश्व को सबसे अधिक प्रभावित किया उनमें से एक उनकी मृत्यु के समय की प्रकाशित फोटो जिसमें उनकी वास्तविक संपत्ति का चित्रण हैः एक चश्मा, एक जोड़ी चप्पल, कुछ साधारण वस्त्र, एक चरखा और एक पुस्तक किन्तु फिर भी लोग यह मानते थे कि संसार के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक दुनिया से विदा हो गया। शायद संसार किसी गहरे चेतन में व्यक्ति इस तथ्य के प्रति कहीं न कहीं जागरूक था, कि व्यक्ति अपनी आवश्यकता के उस अनुपात तक पहुंच सकता है, जो उसके अकेले के लिए आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि यदि मानव सफलतापूर्वक अपना जीवनयापन करता है तो वह धीरे–धीरे उस परिपक्व व्यक्ति की तरह हो जाता है, जिसे वास्तव में किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती । गांधी जी स्वयं इस प्रकार की संवृद्धि एवं सफलता के दुर्लभ उदाहरण थे । उनका जीवन बाकी लोगों के लिए यह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि हम मानवीय विकास की संभावनाओं को पहचानने में कितने पीछे हैं।

सच्ची सफलता को प्राप्त करने में कुछ स्थिर कारक हैं, जो शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में प्रगतिवादी एवं सबल निमित्त हैं।

1. प्रथम स्थिर कारक–उद्देश्य है। व्यक्ति को यह पता होना चाहिए कि जो भी प्रयास वह कर रहा है वह उसे लक्ष्य की ओर आगे बढा रहा है(यहॉ इसका आशय शैक्षणिक लक्ष्य से है)। जब तक व्यक्ति के पास उद्देश्य है, उसे अनुभव होता है कि उसकी सारी उर्जा और रचनात्मक विचार उसे उच्च स्तर तक पहुॅचा रहे हैं, अन्यथा व्यक्ति भौतिक रूप से तो वृद्धि प्राप्त करता है परन्तु जीवन में अर्थपूर्ण सफलता नहीं प्राप्त हो पाती।
2. सफलता औसत बल्लेबाजी के आंतरिक चरित्र का नाम है। सफलता किसी टुकडे, हर घण्टे, प्रत्येक दिन का नाम नहीं है जो समान रूप से सफल हो बल्कि सफलता की राह में बाधक अस्थाई विफलता रूपी रोड़े हैं । उन्हे सीढ़ी बनाकर बेहतर सफलता की दिशा में जाने की आवश्यकता है। यद्यपि यह प्राचीन मान्यता है कि शतप्रतिशत सफलता प्राप्त करना इतना आसान नहीं है, तथापि आप जैसे परिपक्व व्यक्ति के लिए कम से कम उर्जा को उस तथ्य से जूझने में व्यर्थ करने से बचाकर अपनी सर्वाधिक शक्ति को सफलता की आधार शिला बनाने में प्रयोग में लाइए।
3. सफलता का अगला घटक उसकी कीमत है । मुफ्त में किसी को सफलता नहीं मिलती । मेरा मानना है कि सफलता हमारे प्रयासों पर ही आधारित होती है । सफलता की मांग प्रयास ही है । मानवीय चरित्र का वह

छोटा/जादुई पहलू जो हम सबमें विद्यमान है। सफलता और प्रयास के संबंध को किसी भी रूप में अलग नहीं किया जा सकता ।

4. सफलता प्राप्त करने के संतोष को किसी अन्य को जानने की आवश्यकता नहीं होती, जब तक कि वह व्यक्ति जो स्वयं संतोष प्राप्त करता है उसे जानता है। यदि आपके शिक्षकों के मन में एक शुद्ध भावना है कि वह एक कार्य जिसे वह हृदय से चाहते हैं, पूरी तन्मयता से कर रहे हैं, तो सफलता का वह अंश निश्चित रूप से उनका है। चाहे कोई और उसे जाने या न जाने । यह कारक व्यक्ति की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है, न कि प्रत्यक्ष प्रमाण पर

शैक्षणिक प्रगति में आपका दृष्टिकोण ही समुदाय विशेष में आपको समझने का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए शैक्षणिक दृष्टि में सुधार और सफलता के सिद्धान्त ही आपकी समझ और जीवन के अनुभव में विस्तार प्रदान कर सकते हैं। यह आपको सफलता के परिपेक्ष्य में विचारों का स्तर और आपकी अपनी पहचान बढ़ाने में सहायक हो सकता है और साथ ही आप यह भी सदैव याद रखेगें कि जो कुछ भी घटित होता है वह अच्छे के लिए ही होता है।

सार रूप में सफलता न तो जकड़जामा (संकीर्ण वस्त्र) है न कोई ऐसा सांचा जिसमें हर किसी को ढाल सकते हैं, न कोई कठोर सील जिसे हर जगह समान रूप से प्रयोग कर सकते हैं।यह हमारी दृष्टि या हमारी उंगलियों के चिह्नों के अनुरूप अलग–अलग व्यक्तियों के लिए भिन्न–भिन्न है। हम सभी को इसे समझने के साहस की आवश्यकता है। यद्यपि यह आपके उपर है कि आप इसे कैसे समझते हैं। कोई भी व्यक्ति आपके लिए जीवन नहीं जी सकता । कोई भी आपके लिए सफल नहीं हो सकता । यह आपका अपना लक्ष्य है। आप सशक्त और बहादुर प्राणी हैं। कक्षा 10वी एवं 12वीं के शतप्रतिशत परिणामों के लक्ष्य का पीछा पूरे जुनून से करिए।

यह पत्र उपायुक्त महोदय के अर्द्धशासकीय पत्र दिनांक 02.10.2015 के हिन्दी अनुवाद का प्रयास है।

डा.(श्रीमती) बी.कौर
सहायक आयुक्त

प्राचार्य
समस्त केन्द्रीय विद्यालय
भोपाल/आगरा संभाग